

## Delusional Disorder भ्रम संबंधी विकार

भ्रम संबंधी विकार क्या है?

भ्रम संबंधी विकार एक प्रकार का मनोविकृति है जिसमें मरीज लगातार एक ही भ्रम या एक भ्रम की प्रणाली पर ही विचार करता है। स्वयं के द्वारा भ्रमित, एक ऐसा मनोवैज्ञानिक लक्षण होता है जिसमें मरीज के मस्तिष्क में ऐसा भ्रम घर कर लेता जिन्हें वह किसी भी कीमत में छोड़ना नहीं चाहता है इसके लिये आप चाहे जितने भी सबूत दे दें। एक बात को ध्यान में रखना चाहिए: मनोचिकित्सक को पीड़ित के सांस्कृतिक, परवरिश, शैक्षिक और धार्मिक पृष्ठभूमि पर बहुत कड़ाई से और सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। वास्तव में हमें उन अति मूल्यवान तथ्यों पर विचार करना चाहिये जो मरीज की संस्कृति, परवरिश, शिक्षा और धर्म में ऐसे घुले होते हैं, कि वे आसानी से संदेह और भ्रम को पैदा करते हैं। मरीजों की रक्षा करने के लिए, इस बीमारी को जानने के लिये मनोचिकित्सकों का उपयोग किया जाना चाहिए।

भ्रम संबंधी विकार महामारी विज्ञान में स्कीज़ोफ्रेनिया से कम है। नर-से-महिला अनुपात लगभग एक से एक है, पुरुष के मुकाबले महिलाओं का अनुपात थोड़ा अधिक है। शुरुआत की उम्र लगभग चालीस साल है

भ्रम विकार के उपप्रकार क्या हैं?

- छलनी उत्पीड़न भ्रम
- सताना भ्रम
- अतिचिंता / दैहिक
- ईर्ष्या
- विवादी
- निर्देशात्मक
- कामोन्माद

भ्रम विकार की एटियोलॉजी क्या है?

भ्रम संबंधी विकार की एटियोलॉजी बहुत जटिल है, इसमें यह बताना मुस्किल है की यह जन्मजात और वंशानुगत कारक से होती है। शारीरिक दृष्टिकोण से, यह बीमारी मस्तिष्क की लिम्बिक प्रणाली और मस्तिष्क के भीतर बेसल गैन्ग्लिया में उत्पन्न कुछ दोष के कारण हो सकती हैं। इस बीमारी के सबसे महत्वपूर्ण कारक, मनोवैज्ञानिक विकास बाधाएं हैं, जैसे बचपन का दुरुपयोग, दूसरों के साथ आपसी विश्वास स्थापित करने में अक्षमता, रोगप्रतिकारक पालन आदि। अन्य कारकों में कम सुनायी पड़ना , कम दिखायी पड़ना , आव्रजन, अलगाव, संदिग्ध और संवेदनशील स्वभाव और अग्रिम उम्र आदि के कारण अपरिवर्तनीय परिवर्तन शामिल हैं

भ्रम विकार के पाठ्यक्रम के बारे में क्या?

भ्रम रोग से ग्रसित रोगी, बिना उचित उपचार के, जीवन भर इधर उधर भटकते रहते हैं। भ्रम विकार के उपचार की प्रभावशीलता, यद्यपि स्कीज़ोफ्रेनिया या एफ़ेक्टिव डिसऑर्डर के मुकाबले इतनी अनुकूल नहीं है, फिर भी 50% मामलों में यह पूर्णतया ठीक हो जाती है या लक्षणों के उन्मूलन को प्राप्त कर सकते हैं। भ्रम विकार मनोवैज्ञानिक दृष्टि के हिसाब से, यद्यपि शिज़ोफ़्रॉनिक्स की तुलना में कम घातक है। यद्यपि रोगी अक्सर अज्ञानता के कारण उपचार से इंकार करते हैं जिसके कारण उनका रोग और अधिक बढ़ जाता है।

भ्रम विकार के उपचार के क्या विकल्प हैं?

1. औषधीय उपचारएंटी-मनोवैज्ञानिक दवायें इस बीमारी में काम कर सकती हैं जो कभी-कभी मरीज के भ्रम को समाप्त करती हैं; ये दवायें चिंता, चिड़चिड़ापन और न सोने जैसे मानसिक लक्षणों को भी कम करती हैं। अधिकतर रोगियों के मन में दवाओं प्रति संदेह रहता है, और वे स्वयं दवाओं के दुष्प्रभावों के प्रति संवेदनशील होते हैं, इसलिये डॉक्टर इन दवाओं की खुराकों कम स्तर से शुरू करता है। डॉक्टर दवा के खुराक को धीरे-धीरे बढ़ाते, ताकि रोगी को संदेह न हो।

अधिकतर भ्रम विकार से पीड़ित अधिकांश रोगी किसी भी उपचार को प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं हैं, इसलिये रोगी और डॉक्टर के बीच का तालमेल बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि चिकित्सक रोगी के विश्वास को प्राप्त कर लेता है तो रोगी आसानी से दवायें लेने के लिये तैयार हो जाता है। यहां तक कि वे नहीं मानते हैं कि उन्हें कोई मानसिक बीमारी है, वे भी दवायें लेने के लिए चिकित्सक की सलाह को मान लेते हैं।

## 2 मनोचिकित्सा

भ्रम विकार के उपचार के लिये मनोचिकित्सा में औषधीय उपचार के साथ साथ रोगी से सामान्य बातचीत को भी जोड़ना चाहिये। चिकित्सक को रोगी की भ्रम की दशा में गर्म बहस से होगा, लेकिन उचित समय आने पर उन्हें वास्तविकता बतानी चाहिये।

उन दुर्दम्य मामलों से निपटने के लिए, रोगियों के डॉक्टर को मरीजों को एक खुशहाल जीवन जीने में मदद करनी चाहिये , और उन्हें अपने भ्रम के साथ शांति पूर्वक रहने मदद करनी चाहिये । डॉक्टर को भी मरीजों की चिंतनशीलता, असहायता और उनके दिलों में घर कर शर्मिंदगी को समझने की कोशिश करनी चाहिये ; और उनकी आंतरिक निराशा को हल करने में उनकी मदद करें इसके साथ ही साथ डॉक्टर को रोगियों यह भी सिखाना चाहिये कि कैसे अचानक तनाव बढ़ने पर संकट को संभालना होता है।